निबन्ध विषय- हिमालय परिक्षेत्र की भोटी भाषा एवं उसका महत्व

अनेक कठिनाइयों का सामना कर।
सुदूर आर्य देश भारत में किया स्वागत।
पूज्य गुरुओं के चरणों में निवास कर।
अतुल्य अनुवादक बन तिब्बत के लिए प्रस्थान।
आचार्य थोनमी तुम्हें शत-शत प्रणाम।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद न्यास और केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह-लद्दाख द्वारा संयुक्त रूप से ''साहित्य और लोकजीवन में हिमालय'' विषय पर दो दिवसीय अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी का आयोजन किया गया है। आयोजकों के आदेश अनुसार मैंने भी दिये हुए विषय पर एक संक्षेप लेख तैयार किया है।

हिमवन्त प्रदेश तिब्बत देश के प्रथम अनुवादक अथवा भोटभाषा के निर्माता आचार्य थोनमी सम्भोट को उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से मैंने अपने मन से शत-शत नमन करते हुए अनेक विषयों में से एक '' भोटी भाषा एवं उसका महत्व'' विषय पर एक लघु निबन्ध तैयार करने का प्रयास किया है। हम सब को ज्ञात है कि इस संसार में सीखने के लिए असंख्य विद्याएँ उपलब्ध हैं। इन में पाँच महाविद्याएँ और पाँच लघु विद्याएँ प्रमुख हैं।

1 पाँच [1]महाविद्याएँ - 1 शब्द विद्या 2 प्रमाण विद्या 3 चिकित्सा विद्या 4 कला विद्या और 5 अध्यात्म विद्या

2 पाँच लघु विद्याएँः- 1 काव्य, 2 अभिधन, 3 नाटक 4 छन्द 5 ज्योतिष।

शास्त्रों के अनुसार सभी दस विधाओं में से सर्वप्रथम शब्द विद्या का अध्ययन करना आवश्यक होता है और उसका अध्ययन किया भी जाता है।

1 भोटी लिपि का संक्षिप्त इतिहासः- भोटी भाषा एवं साहित्य के इतिहास का श्री गणेश [2] सातवीं शताब्दी से होता है, जबकि सम्राट स्त्रोङचन गम्पो भोट देश पर शासन कर रहे थे । इससे पूर्व भोट देश की अपनी कोई लिपि नहीं थी। राजा को बौद्ध हिमालयवासियों के धर्म संस्कृति प्रचार-प्रसार एवं साधना तथा राजकाज चलाने में लिपि के अभाव में कठिनाई का अनुभव हुआ। अतः[3] उन्होंने भोट देश से थोनमी सम्भोटा और अन्य विद्यार्थियों को विद्या

---

1 दुङकर छीगजेद, लोबजङठीनलस पृ. सं. 1900,

2 संभोट व्याकरण के अंगरूप लाहुली भूमिका पृ0 सं0 7

3 मणि क0 बुम स्तोद पृ0 सं0 189

अध्ययन करने के लिए भारतवर्ष भेजा। दुर्गम पहाड़ी मार्गों को पार करके वे तत्कालीन प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र नालन्दा महाविहार पहुँचे । वहाँ उन्होंने पंडित देव विद्या सिंह तथा ब्राह्मण लिपिकार से संस्कृत वाङ्मय बौद्ध दर्शन साहित्य का अध्ययन किया।

2 भोटी भाषा का मूल स्रोतः- भोटी लिपि का मूल स्रोत अर्थात जननी संस्कृत भाषा[4] है। थोनमी सम्भोट ने देवनागरी लिपि के आधार पर भोटी लिपि का [5] अविष्कार किया। स्वर और व्यंजनों में आवश्यकता के अनुरूप वृद्धि और ह्रास करके भोटी में चार स्वर और तीस व्यंजन निर्धारित किये गये। 20वीं शताब्दी के महान विद्वान गेदून छोसफेल के मत अनुसार गुप्त खारोष्ठी लिपि के आधार पर थोनमी सम्भोट ने भोटी लिपि का निर्माण किया था।

3 नामकरणः- भोट भाषा या भोटी भाषा से तात्पर्य भोट देश के लोगों की बोली जानने वाली भाषा है। भोट देशीय प्रजातियों के सम्बन्ध में बहुत सी जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। एक प्रसिद्ध जनश्रुती के अनुसार यह बहुत प्रचलित मान्यता है कि भोट देश की प्रजातियों का सम्बन्ध पूर्वोतर द्वापर युग के राजपूतों के वंश से था।[6] महाभारत के युद्ध में कौरवों की हार के पश्चात रूपवति आदि राजा और बहुत सी राजपूत सेना अपना देश छोड़कर सपरिवार हिमालय में बस गये। इन्हीं लोगों से भोट देशीय विभिन्न प्रजातियों का विस्तार हुआ है। इस तरह का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। इसी मान्यता के आधार पर बहुत से लोग भोट भाषा को आर्य भाषा के परिवार की भाषा मानते हैं। दूसरी प्रचलित मान्यता यह भी है कि पाण्डवों के वनवास के समय कुछ समय के लिए वे लोग व्यास नदी स्रोत स्थान [7] रोथङला'' तटवर्ती '' मनु-आलय'' जिसका अपभ्रंश रूप आज ''मनाली'' कहा जाता है उस दौरान वहाँ के स्थानीय राजकुमारी '' हिडिम्बा'' भीमसेन के सम्पर्क में आ गई। हिडिम्बा ने भीमसेन के दो पुत्रों को जन्म दिया उनमें से बड़े लड़के का नाम था '' कुल्लु'' और कनिष्ठ लड़के का नाम था '' भोट''। भीम ने हिडिम्बा के भाई राक्षस को लड़ाई में मारकर अपने बड़े लड़के '' कुल्लु'' को वहाँ का राजा बना दिया। तब से उस राज्य का नाम '' कुल्लू'' पड़ा। कनिष्ठ पुत्र भोट को '' रोथड.'' दर्रा के पार देवलोक भेज दिया और उसने देवलोक जाकर अपने राज्य की स्थापना की। भोट राजा के राज्य का ही नाम बाद में भोट देश हो गया। भोट के राजवंशों के विस्तार के रूप में भोट देशीय प्रजातियों का विस्तार हुआ है। इन्हीं लोगों की भाषा भोटी भाषा कही जाती है। इन जन-श्रुतियों में सत्यांश कितना है, कहना

---

4 यीग शद खसपई ख गयन स्तनदर लहरमस पा, पृ0सं0 6 से 7

5 यीग शद खसपई ख गयन स्तनदर लहरमस पा, पृ0सं0 9 से 10

6 भोटी भाषा एवं उसका महत्व CIILM द्वारा प्रकाशित, पृ0 सं0 17

7 य भोटी भाषा एवं उसका महत्व, CIILM द्वारा प्रकाशित, पृ0 सं0 17

कठिन है। पर इस समय समस्त हिमालयी क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा को भोटी कहा जाता है । इसे मध्य तिब्बत में भी बोली जाने वाली विकसित भाषाओं का प्राचीनतम रूप माना जाता है।

4 भोट भाषा का विस्तार[8]- भोटी कही जाने वाली भाषा जन भाषा के रूप में समस्त हिमालयी क्षेत्र में बोली जाती है। यह भारत की सीमा रेखा के अन्दर आने वाले हिमालयी क्षेत्रों में सम्पर्क भाषा के रूप में बोली जाती है। उन्नीसवीं सदी के बाद आस्ट्रेलिया, यूरोप, एशिया, जापान, अमेरिका, सहित अन्य देशों के विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थाओं में भोटी भाषा का प्रयोग होता है। तथा अधिकांश क्षेत्रों में बोली जाती है।[9] साथ ही भूटान, नेपाल,मँगोलिया, तिब्बत आदि मध्य एशिया के बहुत बड़े क्षेत्र में इसे शास्त्रीय भाषा के रूप में भी लिखा और बोला जाता है एवं उससे सबन्धित शास्त्रीय विषयों पर अध्ययन अध्यापन और शोध कार्य व्यापक स्तर पर होने लगा है। भोटी मध्य एशिया की प्रमुख भाषा होने के साथ यह भारत के हिमालयी प्रदेश, जैसे- कारगिल, जङस्कर, लेह-लद्दाख , लाहौल, स्पीति, किन्नौर, कुमाऊँ, उत्तरकाशी, सिक्किम, कालिम्पोंग, हिमालयी क्षेत्र की सम्पर्क भाषा होने के साथ यह उनकी सांस्कृतिक भाषा भी है। इन क्षेत्रों में लोगों के जन्म से लेकर मरण तक के संस्कार इसी भाषा में होते हैं। इनके समस्त धार्मिक एवं कर्मकाण्ड ग्रन्थ इसी भाषा में उपलब्ध हैं।

5 भोटी साहित्य :- किसी भाषा की उत्कृष्टता और उसका मूल्य उसमें उपलब्ध साहित्य शास्त्र से आंका जा सकता है। [10] विश्व की उत्कृष्ट प्राचीन भाषाओं में भोटी किसी से कम नहीं हैं। इसमें लिखे गए शास्त्रीय ग्रन्थों का भण्डार न केवल भोट देश में विद्यमान है, अपितु पूर्व में लिचि से लेकर अमेरिका पूरे विश्व में फैला हुआ है।[11] केवल संस्कृत से भोटी में अनुवादित ग्रन्थों की संख्या ही दस हजार से अधिक है। इसके अतिरिक्त भोट देशीय विद्वानों के स्वतंत्र रूप से लिखे गये ग्रन्थों की संख्या तो अनगिनत है। पनछेन छोग्याल-नामगयल (पण्डित दिग्विजय) नाम एक ही व्यक्ति की लिखी गई ग्रन्थों का संग्रह ही एक सौ पोथी (वोल्यूम) से अधिक है।

6 विषय की दृष्टि से:- काव्य, नाटक, व्याकरण, छंद, ज्योतिष आयुर्वेद या चिकित्सा विज्ञान, तर्कशास्त्र, प्रमाण-शास्त्र, दर्शन-शास्त्र, अभिधर्म-शास्त्र, पारमिताशास्त्र, धर्मशास्त्र,

---

8 A report by CIILM, (Central Institute of Indian Language Mysur Govt. of India, Page No. 29

9 A report by CIILM, Page no. 29

10 आचार्य थोन-मी संभोट का जीवन-चरित्र, के अंगरूप लाहुली, केन्द्रीय उच्च तिब्बती (शिक्षा संस्थान, सारनाथा, वाराणसी।

11 भोटी भाषा एवं उसका महत्व, CIILM द्वारा प्रकाशित पृ0 सं0 19

नीतिशास्त्र, कामशास्त्र, कलाशास्त्र एवं तन्त्रशास्त्र आदि विविध विषयों का विपुल शास्त्र इस भाषा में उपलब्ध है।

[12] भगवान बुद्ध के उपदेशों का ग्रन्थ के रूप में उपलब्ध संकलन जिनको त्रिपिटक के नाम से जाना जाता है, भोटी भाषा में एक सौ आठ वोल्यूम में मौजूद है । यह विश्व के अन्य संग्रहों में सबसे बड़ा संग्रह है। विशेष रूप से इस संग्रह में केवल बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट तन्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों का संग्रह चालीस वोल्यूम में है। उपर्युक्त प्रायः सभी ग्रन्थ, जो मूलतः संस्कृत में लिखे गये ग्रन्थ हैं, भोटी भाषा में अनुवादित ग्रन्थ हैं।

उक्त सभी ग्रन्थ इस समय अपनी मूल भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि सातवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक जितने आध्यामिक एवं शास्त्रीय ग्रन्थों की रचना इस भाषा में हुई है, सम्भवतः उतनी रचना किसी अन्य भाषा में नहीं हुई है। यह दूसरी बात है कि पन्द्रहवीं सदी में आधुनिक साहित्य की विपुल रचना हुई है।

7 भोटी भाषा का महत्वः- सामान्यतः विश्व की अध्ययन परम्परा में भाषा अत्याधिक महत्व रखती है। भाषा के अभाव में कोई अध्ययन-अध्यापन सुचारु रूप से आगे नहीं बढ़ सकता। इसी सन्दर्भ में भोटी भाषा लगभग पिछले चौदह-पन्द्रह सौ वर्षों से उच्च अध्ययन अध्यापन का माध्यम बनी हुई है। भारतीय मैदानी इलाकों में संस्कृत भाषा को जो महत्व प्राप्त है, वही महत्व मध्य एशियाई क्षेत्रों एवं हिमालयी क्षेत्रों भोटी भाषा को प्राप्त है। इसके साथ ही सूत्र आदि शिलालेख इस भाषा में प्राप्त होते हैं, उतना सम्भवतः विश्व के किसी भी भाषा में प्राप्त नहीं है।

[13] भारतीय आध्यात्मिक विषयों को अभिव्यक्त करने के लिए संस्कृत भाषा में जो विशिष्ट क्षमता दृष्टिगत होती है, वही क्षमता भोटी में भी विद्यमान है। यही कारण है कि आज विश्व के विकसित एंव विकासशील क्षेत्रों के अधिकांश उच्च शिक्षा संस्थानों में इस भाषा का अध्ययन अध्यापन एवं शोध कार्य चल रहा है।

[14]8 भोटी भाषा को वर्तमान स्थिति – राज्य सरकारों की सूची, जिन्होंने '' भोटी भाषा'' को मान्यता प्रदान की।

---

[12] बौद्ध धर्म का परिचय, अनुवादक डा0 वांगचुक दोर्जे नेगी, पृ0 सं0 98 से 105, भोटी भाषा एंव उसका महत्व पृ0 सं0 26

[13] भोटी भाषा एंव उसका महत्व पृ0 सं0 19 से 20

[14] A report by CIILM, Page no. 38

1 अरुणाचल प्रदेश सरकार
2 सिक्किम सरकार
3 पश्चिम बंगाल सरकार
4 हिमाचल सरकार द्वारा विशेष सम्मान (सुविधा) प्रदान किया गया।
5 जम्मू-कश्मीर सरकार

(ख) भोटी भाषा के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्थाः-भोटी भाषा का विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।
संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
विश्वविद्यालय कलकत्ता।
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
पंजाब विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
मगध विश्वविद्यालय, कलकत्ता।
केन्द्रीय तिब्बती शिक्षा संस्थान, वाराणसी।
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, जम्मू व कश्मीर
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह-लद्धाख

आदि से लेकर अरुणाचल तक के सीमावर्ती क्षेत्र के अधिकतर सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में भोटी भाषा का अध्ययन प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक निःशुल्क है। विशेषकर सात सौ से अधिक मठों में भोटी भाष के पुस्तकालय एवं अध्ययन परम्परागत ढंग से चलाया जा रहा है।

(ग) भोटी भाषा के समाचारः- आकाशवाणी लेह (जम्मू व कश्मीर)
आकाशवाणी शिमला (हिमाचल प्रदेश)
आकाशवाणी गंगटोक (सिक्कम)
आकाशवाणी खरशंग (दार्जलिंग)
आकाशवाणी तवांग (अरूणाचल प्रदेश)
आकाशवाणी दिल्ली

(घ) भोटी भाषा में प्रिटिंग प्रेसः- रत्न प्रिंटींग प्रेस
शिवम प्रिटींग प्रेस
सिक्कीम सरकारी प्रिंटींग प्रेस
जयेद प्रिंटींग प्रेस
सतनाम प्रिंटींग प्रेस वाराणसी
माइको मिंट इण्डिया (प्रा0) लिमिटेड, देहरादून

भोटी भाषा में कम्प्यूटर तथा टाईप राईटर एवं हस्त निर्मित ब्लॉक की परम्परागत ढ़ग से छपाई की भी व्यवस्था उपलब्ध है।

(ड0) पुस्तकालय :- जायसवाल पुस्तकालय, पटना
केन्द्रीय । तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी,
सरस्वती पुस्तकालय, दिल्ली
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
नामग्याल इंस्टीटयूट, गंगटोक
शांति निकेतन विश्वविद्यालय कलकत्ता
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह-लद्दाख

संपूर्ण बौद्ध बहुल हिमालय क्षेत्र में प्रत्येक बौद्ध, मठ व मंदिर का अपना पुस्तकालय स्थापित है। जिनमें न्यूनतम 300 से लेकर 500 तक पोथी पुस्तकें होती हैं।

(च) समाचार पत्र एवं पत्रिका :- मैत्री दूत- किन्नौर
रिंग- पई दुत-ची लद्दाख
डेंजोंग जमाता सिक्किम
कुन-साल,सिक्कीम
हिमालय डायंग, दिल्ली

सर्वमंगलम्

डॉ छेवांग यगजोर
सहायक प्रोफेसर, भोट साहित्य,
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान
चोगलमससर, लेह-लद्दाख